# पाइय विण्णाणं

## पढमं

# जिणवाणी-थुदी
## भारदी-थुदी

प्राकृताचार्य श्री सुनीलसागर जी महाराज

(गायन शैली- जयतु संस्कृतं...)

जयदु भारदी, जयदु भारदी-२, जिणवाणी सारदा, सुयदेवी सरस्सदी-२।

वीरमुह-णिग्गदा, गोदमादि-गंथिदा;
सुदसूरी-भासिदा, गुणधरादि-विरइदा।
कुंदकुंद-भारदी, सुदधरादि धारदी;
जिणवाणी सारदा, सुयदेवी सरस्सदी ॥ जयदु. १ ॥

अण्णाण-तम-हारिणी, सण्णाण-सुद-कारिणी,
सुहद-संति दायिणी, बारसंग धारिणी।
मिच्छत्त-अंध णासदि, सम्मत्त सम्म सासदि,
जिणवाणी सारदा, सुयदेवी सरस्सदी ॥ जयदु. २ ॥

विसय-विस-रेयणं, जम्ममरण छेयणं,
जिणवयण-मोसहं, सत्थ-हि सुहारसं।
कम्मपुंज य जारदि, भवजलहि तारदि,
जिणवाणी सारदा, सुयदेवी सरस्सदी ॥ जयदु. ३ ॥

प्रेरणा एवं आशीर्वाद

प्राकृताचार्य श्री 108 सुनीलसागर जी महाराज

पुण्यार्जक

आचार्य आदिसागर अंकलीकर अन्तर्राष्ट्रीय जागृति मंच, मुम्बई

## **पाहणा - पंच महागुरु भत्ति** (प्रार्थना - पंच महागुरु भक्ति)

मणुय णाइंद-सुर-धरिय-छत्तत्तया,
पंचकल्लाण-सोक्खावली-पत्तया।
दंसणं णाणं झाणं अणंतं बलं,
ते जिणा दिंतु अम्हं वरं मंगलं ॥1॥

जेहिं झाणग्गि-बाणेहिं अइ-दिढ्ढयं,
जम्म-जर-मरण-णयरत्तयं दड्ढयं,
जेहिं पत्तं सिवं सासयं ठाणयं,
ते महं दिंतु सिद्धा वरं णाणयं ॥2॥

पंच-हाचार-पंचग्गि-संसाहया,
बारसंगाइ-सुअ-जलहि-अवगाहया।
मोक्ख-लच्छी महंती महं ते सया,
सूरिणो दिंतु मोक्खं गयासं गया ॥3॥

घोर-संसार-भीमाडवी-काडणे,
तिक्ख-वियरालणह-पाव-पंचाणणे।
णट्ठ-मग्गाण जीवाण पहदेसिया,
वंदिमो ते उवज्झाय अम्हे सया ॥4॥

उग्ग तव चरण करणेहिं झीणं गया,
धम्म वर झाण सुक्केक्क-झाणं गया।
णिब्भरं तवसिरीए समालिंगया,
साहवो ते महं मोक्खपहमग्गया ॥5॥

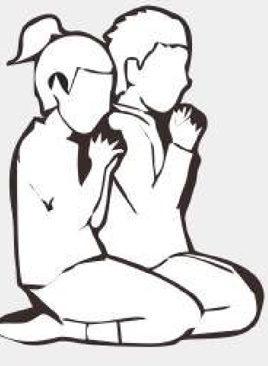

एण थोत्तेण जो पंचगुरु वंदए,
गुरुय-संसार-घण-वेल्लि सो छिंदए।
लहइ सो सिद्धसोक्खाइं बहुमाणणं,
कुणइ कम्मिंधणं पुंजपज्जालणं ॥6॥

अरुहा सिद्धा-इरिया, उवज्झाया साहु पंचपरमेट्ठी।
एयाण-णमोयारा, भवे भवे मम सुहं दिंतु॥7॥

प्राकृतश्री- 9

कृति : **पाइय विण्णाणं** पढमं

सम्पादक : डॉ. आशीष जैन आचार्य शाहगढ़, सागर

पाठ्यक्रम
निर्माण समिति : 1. प्रो. ऋषभचन्द्र जैन फौजदार, दमोह
2. डॉ. उदयचन्द जैन, उदयपुर
3. डॉ. धर्मेन्द्र जैन, जयपुर
4. डॉ. शैलेश कुमार जैन, बांसवाड़ा
5. डॉ. आशीष कुमार जैन ,बम्हौरी
6. डॉ. समता जैन मारौरा, इन्दौर

साज-सज्जा : अभिषेक कुमार जैन शास्त्री, सागर

संस्करण : प्रथम, वी.नि.सं. 2551, वि.सं. 2081, सन् 2025

आवृत्ति : 1000

ISBN : 978-81-986457-2-2

प्राप्ति स्थल : डॉ. आशीष जैन आचार्य शाहगढ़-सागर
154, गीतांजलि ग्रीनसिटी, संजय ड्राइव रोड
सागर-470002 (म.प्र.) **9329092390**

डॉ. आशीष कुमार जैन, बम्हौरी
सहायक प्राध्यापक, एकलव्य विश्वविद्यालय
दमोह (म.प्र.) **9685846161**
WEBSITE- www.prakritbhasha.com
EMAIL- prakritfoundation25@gmail.com

प्रकाशक : **प्राकृत भाषा विकास फाउण्डेशन (रजि.)**
सागर (म.प्र.)

©
प्राकृत भाषा विकास फाउण्डेशन
प्रकाशक / लेखक की अनुमति के बिना इस पुस्तक को या इसके किसी अंश को संक्षिप्त, परिवर्तित कर प्रकाशित करना या फिल्म आदि बनाना कानूनी अपराध है।

# प्राकृत-संवर्धन की दिशा में...

**निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।**
**बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ॥**

**प्राकृत भाषा विकास फाउण्डेशन** की स्थापना का मूल उद्देश्य प्राचीनतम भाषा प्राकृत का संरक्षण व संवर्धन है। इस हेतु आबाल-वृद्ध में जागृति लाने के लिए फाउण्डेशन द्वारा अनेक प्रकार की कार्य योजनाएँ प्रारम्भ की जा रही हैं। इन कार्ययोजनाओं के अंतर्गत लग रहे **प्राकृत विद्या शिक्षण शिविरों** की मौलिकता और उपयोगिता है क्योंकि इन शिविरों के माध्यम से जन सामान्य में प्राकृत भाषा की प्राचीनता, उसकी प्रामाणिकता, उसके समृद्ध साहित्य में संरक्षित आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, नैतिक, चारित्रिक, दार्शनिक और वैज्ञानिक सूत्रों को जन-जन तक पहुँचाने तथा प्राकृत भाषा के जन जागरण का पुनीत कार्य किया जायेगा।

भारत सरकार की ओर से प्राकृत भाषा को शास्त्रीय भाषा का दर्जा मिलना हमारे लिए गौरव का विषय है। जब देश में हिन्दी दिवस, संस्कृत दिवस आदि मनाए जाते हों तब प्राचीनतम जन भाषा प्राकृत के नाम पर **प्राकृत दिवस** मनाना और राष्ट्र व विश्व पटल पर इस भाषा को पुर्नस्थापित करने का दायित्व हम सबका बन जाता है।

प्राकृत भाषा के संरक्षण व संवर्धन हेतु विशेष रूप से कार्य कर रहे दिगम्बर जैन संत **प्राकृताचार्य श्री सुनीलसागर जी महाराज** की दूरदर्शिता पूर्ण सत्प्रेरणा और शुभाशीष से फाउण्डेशन की स्थापना की गई है। हजारों प्राकृत गाथाओं के लेखक प्राकृत भाषा चक्रवर्ती **आ.श्री वसुनन्दी जी महाराज,** प्राकृत विद्या पाठ्यक्रम के माध्यम से प्राकृत के उत्थान में निरत **मुनिवर श्री प्रणम्यसागर जी महाराज** एवं प्राकृत प्रशिक्षण शिविरों से प्राकृत अध्येता तैयार कर रहे **मुनिवर श्री आदित्यसागर जी महाराज** का प्रत्यक्ष व परोक्ष मार्गदर्शन व प्रेरणा हमारा उत्साहवर्धन कर रही है। फाउण्डेशन को प्राप्त **आ.श्री वर्धमानसागर जी, आ.श्री समयसागर जी, आ.श्री विशुद्धसागर जी** सहित साधुओं व आर्यिकाओं मंगल आशीर्वाद तथा व विद्वत्मनीषियों का मार्गदर्शन प्राकृत भाषा के सातिशय प्रचार-प्रसार का प्रशस्त हेतु बनेगा।

प्रस्तुत **पाइय विण्णाणं पढमं** समाज में प्राकृत-अध्ययन के प्रति लोगों में उत्साह-संचरित करेगा। इसमें आचार्य अकलंक देव जैन विद्या शोधालय समिति उज्जैन द्वारा प्रकाशित पाइय सिक्खा, लेखक- पूज्य मुनि श्री प्रणम्यसागर जी महाराज एवं भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली द्वारा प्रकाशित प्राकृत बोध, लेखक- प्राकृताचार्य श्री सुनीलसागर जी महाराज आदि की सामग्री का उपयोग भी किया गया है। इस कृति को प्राकृत मनीषी डॉ. उदयचन्द जैन उदयपुर द्वारा संशोधित एवं परिष्कृत किया गया है। ब्र. डॉ. धर्मेन्द्र जैन जयपुर, डॉ. समता जैन इन्दौर का भी महत्त्वपूर्ण योगदान प्राप्त हुआ। एतदर्थ उक्त सभी के प्रति फाउण्डेशन साभार कृतज्ञता व्यक्त करता है।

इस महत्वपूर्ण प्रकाशन में सहयोगी आचार्य आदिसागर अंकलीकर अन्तर्राष्ट्रीय जागृति मंच मुम्बई का प्राकृत भाषा विकास फाउण्डेशन (रजि.) सधन्यवाद आभार व्यक्त करते हुए मंगल भावना भाता है-

**जयदु पागदभासा, बंभी लिवी सव्वदा जयदु।**
**जयदु अहिंसा धम्मो, भारदवस्सो सदा जयदु ॥**

(आ.श्री सुनीलसागर-विरचित गाथा)

प्रकाशन मंत्री
डॉ. शैलेश कुमार जैन

# **विसयाणुक्कमणिआ** (विषयानुक्रमणिका)


| | | | |
|---|---|---|---|
| | | **पाहणा - पंचमहागुरुभत्ति** | 1 |
| | | **प्राकृत-संवर्धन की दिशा में...** | 3 |
| **पढमो पाढो** | - | **महामंत-णमोयारो** (महामंत्र णमोकार) | 5 |
| **बीओ पाढो** | - | **चत्तारि दण्डको** (चत्तारि दण्डक) | 6 |
| **तइओ पाढो** | - | **पाइय-वण्णमाला** (प्राकृत वर्णमाला) | 7 |
| **चउत्थो पाढो** | - | **तित्थयरो** (तीर्थंकर) | 10 |
| **पंचमो पाढो** | - | **चउवीस-तित्थयर-णाम** (चौबीस तीर्थंकरों के नाम) | 11 |
| **छट्ठो पाढो** | - | **परमेट्ठी** (परमेष्ठी) | 13 |
| **सत्तमो पाढो** | - | **सुभासिदाणि** (सुभाषित) | 15 |
| **अट्ठमो पाढो** | - | **इंदियाणि** (इन्द्रियाँ) | 17 |
| **णवमो पाढो** | - | **गई / गदि** (गति) | 18 |
| **दसमो पाढो** | - | **पावं** (पाप) | 19 |
| **एग्गारसो पाढो** | - | **कसायो** (कषाय) | 20 |
| **बारसो पाढो** | - | **पाइय-सद्द-णाणं** (प्राकृत शब्द ज्ञान) | 21 |
| **तेरसो पाढो** | - | **सरीरस्स अंगाणं णामाइं** (शरीर के अंगों के नाम) | 22 |
| **चउद्दसो पाढो** | - | **पाइय संखा** (प्राकृत संख्या- 1 से 50 तक) | 23 |
| **पण्णरसो पाढो** | - | **पाइय पसंसा** (प्राकृत प्रशंसा) | 25 |
| **सोलसो पाढो** | - | **तित्थयरो-महावीरो** (तीर्थंकर महावीर) | 26 |
| **सत्तरहो पाढो** | - | **पाइयभासाए गंथाणं णाम** (ग्रन्थों के नाम) | 28 |
| **अट्ठारहो पाढो** | - | **पाइयभासाए आयरियाणं मुणीणं य णाम** (प्राकृत भाषा के आचार्य एवं मुनियों के नाम) | 29 |
| **एगोणवीसो पाढो** | - | **लोयोत्तीओ** (लोकोक्तियाँ) | 30 |
| **वीसो पाढो** | - | **गीयं** (गीत) | 31 |
| **एगवीसो पाढो** | - | **सुभासिदवयणं** (सुभाषित वचन) | 32 |
| | | **गोम्मटेस-थुदी** | 33 |

# पढमो पाढो

## **महामंत-णमोयारो** (महामंत्र णमोकार)

**णमो अरिहंताणं**
**णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं**
**णमो उवज्झायाणं**
**णमो लोए सव्वसाहूणं ॥**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **णमो** | - | नमस्कार हो | **अरिहंताणं** | - | अरिहंतों को |
| **सिद्धाणं** | - | सिद्धों को | **आइरियाणं** | - | आचार्यों को |
| **उवज्झायाणं** | - | उपाध्यायों को | **लोए** | - | लोक के |
| **सव्वसाहूणं** | - | सभी साधुओं को | | | |

**अर्थ—** अरिहंतों को नमस्कार हो, सिद्धों को नमस्कार हो, आचार्यों को नमस्कार हो, उपाध्यायों को नमस्कार हो और लोक के सब साधुओं को नमस्कार हो।

### णमोयारे पद-अक्खर-मत्ता-सर-वंजणाणि

(णमोकार में पद, अक्षर, मात्राएँ, स्वर एवं व्यंजन)

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **पदाणि** | - | **5** | **अक्खरा** | - | **35** |
| **मत्ता** | - | **58** | **सरा** | - | **34** |
| **वंजणाणि** | - | **30** | | | |

### **णमोयार-मंतस्स महत्ता** (णमोकार मंत्र का माहात्म्य)

**एसो पंच णमोयारो, सव्व पावप्पणासणो।**
**मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होइ मंगलं ॥**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **एसो** | - | यह | | | |
| **पंच णमोयारो** | - | पंच नमस्कार | | | |
| **सव्व** | - | सब | | | |
| **पावप्पणासणो** | - | पापों का नाश करने वाला | | | |
| **मंगलाणं** | - | मंगलों का | **पढमं** | - | पहला |
| **होइ** | - | है | **मंगलं** | - | मंगल |

**अर्थ—** यह पंच नमस्कार मंत्र सब पापों का नाश करने वाला है और सब मंगलों में पहला मंगल है। इसके पढने से मंगल होता है।

## बीओ पाढो

## चत्तारि दण्डको (चत्तारि दण्डक)

अरिहंत

**चत्तारि मंगलं अरहंता मंगलं,**
**सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं।**
**केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं ॥**

**अर्थ–** लोक में चार मंगल हैं। अरिहंत मंगल, सिद्ध मंगल, साधु मंगल, केवली प्रज्ञप्त (कहा गया) धर्म मंगल है।

सिद्ध

**चत्तारि लोगुत्तमा अरहंता लोगुत्तमा,**
**सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा।**
**केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥**

**अर्थ–** लोक में चार उत्तम हैं। अरिहंत उत्तम, सिद्ध उत्तम, साधु उत्तम, केवली प्रज्ञप्त (कहा गया) धर्म उत्तम है।

साधु

**चत्तारि सरणं पव्वज्जामि,**
**अरहंते सरणं पव्वज्जामि,**
**सिद्धे सरणं पव्वज्जामि।**
**साहू सरणं पव्वज्जामि।**
**केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि ॥**

केवली प्रणीत धर्म

**अर्थ–** लोक में चार शरण हैं। अरिहंत शरण, सिद्ध शरण, साधु शरण, केवली प्रज्ञप्त (कहा गया) धर्म शरण है।

## तइओ पाढो- पाइय-वण्णमाला (प्राकृत वर्णमाला)

अ - अरिहंतो (अरिहंत)

आ- आइरिओ (आचार्य)

इ - इंदो (इन्द्र)

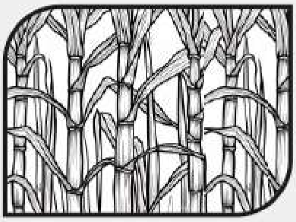

ई - ईखं (गन्ना)

उ - उदहि (सागर)

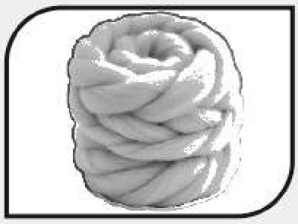

ऊ- ऊणं (ऊन)

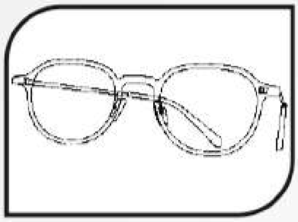

ए - एणगो (चश्मा)

ओ - ओं (ओम्)

क- कमलं (कमल)

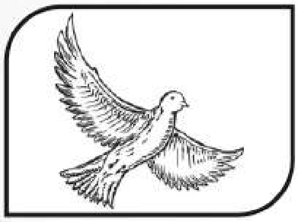

ख - खगो (पक्षी)

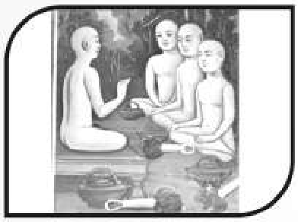

ग- गुरु (गुरु)

घ - घरं (घर)

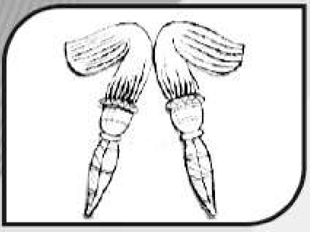

च- चंवराणि (चंवर)

छ - छत्ताणि (छत्र)

ज- जइ (यति/साधु)

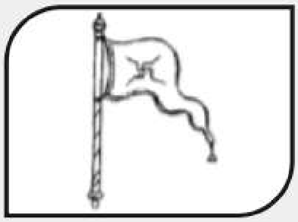

झ - झंडा (झण्डा)

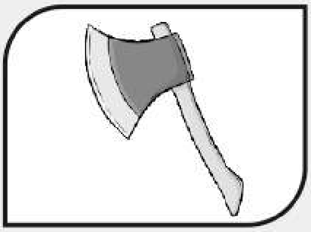

ट - टंको (कुल्हाड़ी)

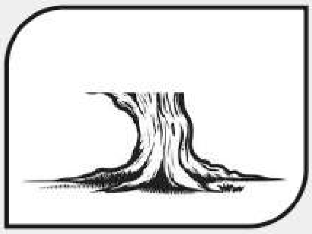

ठ - ठुंठो (ठूंठ)

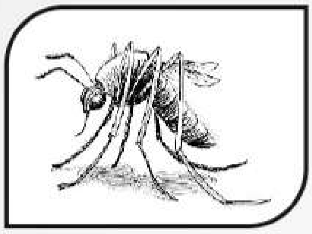

ड- डंसो (मच्छर)

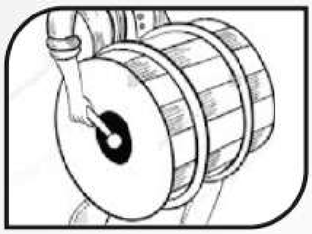

ढ-ढक्का (बड़ा ढोल)

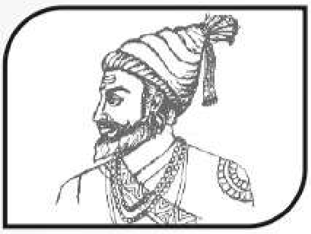

ण - णरिंदो (राजा)

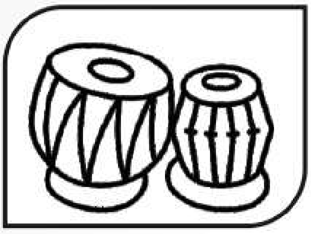

त - तबला (तबला)

थ-थुदी (स्तुति/प्रार्थना)

द - दव्वं (द्रव्य)

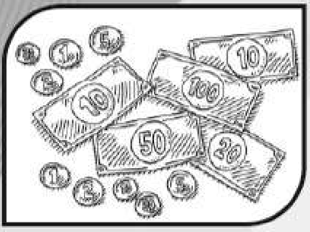

ध- धणं (धन)

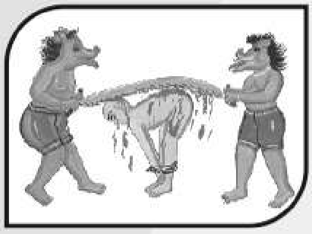

न - णरगो (नरक)

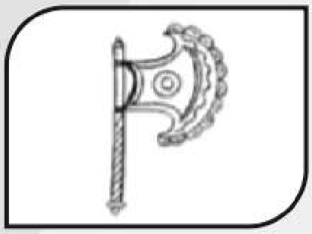

प- पंखं (पंखा)

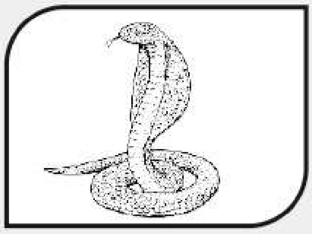

फ- फणं (फण)

ब- बालो (लड़का)

भ- भमरो (भँवरा)

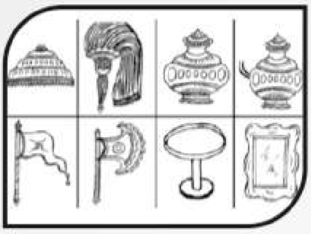

म- मंगलं (मंगल)

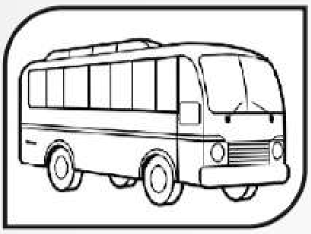

य- याणं (वाहन)

र- रहो (रथ)

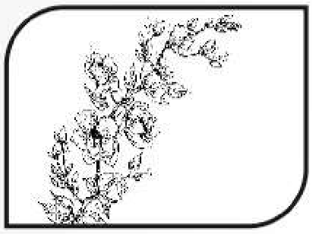

ल- लता (लता)

व - वसणं (वस्त्र)

स - सागरो (समुद्र)

ह - हंसो (हंस)

## चउत्थो पाढो - तित्थयरो (तीर्थंकर)

**पण्हं - तित्थयरो को अत्थि ?** (तीर्थंकर कौन हैं?)

**उत्तरो - जो धम्मतित्थं पवट्ठणइ सो तित्थयरो।**
(जो धर्मतीर्थ का प्रवर्तन करते हैं वह तीर्थंकर हैं।)

**पण्हं - तित्थयरा के ?** (तीर्थंकर कितने हैं?)

**उत्तरो - तित्थयरा चउबीसा।** (तीर्थंकर चौबीस हैं।)

**पण्हं - तित्थयराणं अहिण्णाणं कहं हवइ ?**
(तीर्थंकर की पहचान कैसे होती है ?)

**उत्तरो - तित्थयराणं अहिण्णाणं चिण्हेहिं हवइ।**
(तीर्थंकर की पहचान चिह्न से होती है।)

**पण्हं - चिण्हं कुदो हवइ ?**
(चिह्न कहाँ होता है ?)

**उत्तरो - चिण्हं दाहिण-पाद-अंगुट्ठे हवइ।**
(चिह्न दाहिने पैर के अंगूठे में होता है।)

**पण्हं - तित्थयरस्स चिण्हं को कुदो य देक्खइ ?**
(तीर्थंकर का चिह्न कौन और कहाँ देखता है?)

**उत्तरो - तित्थयरस्स चिण्हं पाण्डुगसिलाए सोधम्म-इंदो देक्खइ।**
(तीर्थंकर का चिह्न पाण्डुकशिला पर सौधर्म इन्द्र देखता है।)

**पण्हं - पढमो तित्थयरो को अत्थि ?** (पहले तीर्थंकर कौन हैं ?)

**उत्तरो - पढमो तित्थयरो उसहणाहो अत्थि।** (पहले तीर्थंकर ऋषभनाथ हैं।)

**पण्हं - अंतिमो तित्थयरो को अत्थि ?** (अंतिम तीर्थंकर कौन हैं ?)

**उत्तरो - अंतिमो तित्थयरो वड्ढमाणो अत्थि।** (अंतिम तीर्थंकर वर्धमान स्वामी हैं।)

**पण्हं - भगवया के संति ?** (भगवान् कितने होते हैं ?)

**उत्तरो - भगवया अणंता संति।** (भगवान् अनंत होते हैं।)

**पण्हं - भगवया कुदो वसंति ?** (भगवान् कहाँ रहते हैं ?)

**उत्तरो - भगवया सिद्धलोए वसंति।** (भगवान् सिद्धालय में रहते हैं।)

## पंचमो पाढो - चउवीस-तित्थयर-णाम (चौबीस तीर्थंकरों के नाम)

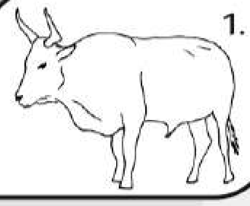

1. उसहणाहो - वृषभनाथ
वसहो - वृषभ

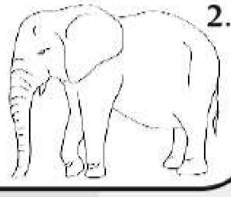

2. अजियणाहो - अजितनाथ
हत्थी - हाथी

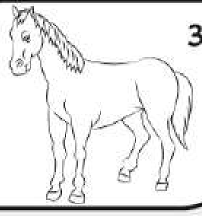

3. संभवणाहो - शंभवनाथ
अस्सो - घोड़ा

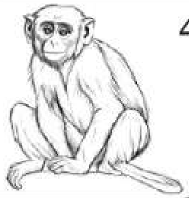

4. अभिणंदणणाहो - अभिनंदननाथ
वाणरो - बंदर

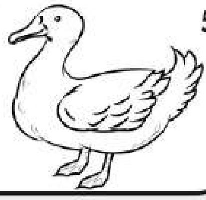

5. सुमइणाहो - सुमतिनाथ
चकवा - चकवा

6. पउमप्पहो - पद्मप्रभ
रत्तकमलं - लालकमल

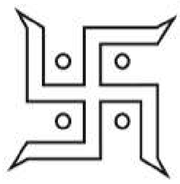

7. सुपासणाहो - सुपार्श्वनाथ
सत्थिओ - साथिया

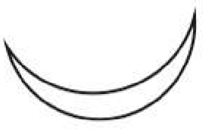

8. चंदप्पहो - चंद्रप्रभ
चंदो - चंद्रमा

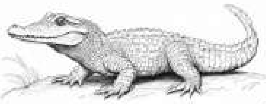

9. पुप्फदंतणाहो - पुष्पदंतनाथ
मगरमच्छो - मगरमच्छ

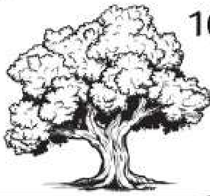

10. सीयलणाहो - शीतलनाथ
कप्परुक्खो - कल्पवृक्ष

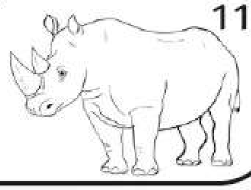

11. सेयंसणाहो - श्रेयांसनाथ
गेंडा - गेंडा

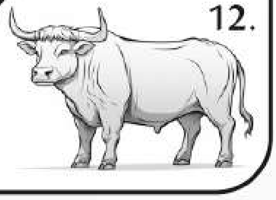

12. वासुपुज्जणाहो - वासुपूज्यनाथ
महिसो - भैंसा

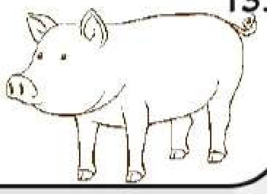

13. विमलणाहो - विमलनाथ
सूयरो - सूअर

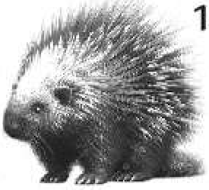

14. अणंतणाहो - अनंतनाथ
सेही - सेही

15. धम्मणाहो - धर्मनाथ
वज्जदंडो - वज्रदण्ड

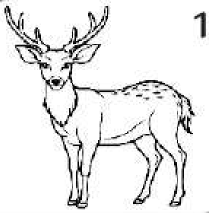

16. संतिणाहो - शांतिनाथ
हिरणो - हिरन

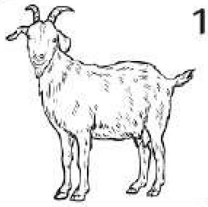

17. कुंथुणाहो - कुंथुनाथ
अजो - बकरा

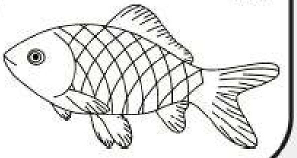

18. अरणाहो - अरनाथ
मच्छो - मछली

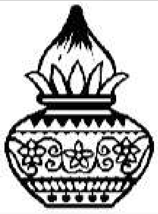

19. मल्लिणाहो - मल्लिनाथ
कलसो - कलश

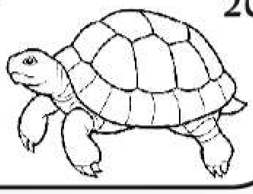

20. मुणिसुव्वयणाहो - मुनिसुव्रतनाथ
कच्छवो - कछुआ

21. णमिणाहो - नमिनाथ
णीलकमलं - नीलकमल

22. णेमिणाहो - नेमिनाथ
संखो - शंख

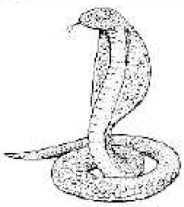

23. पासणाहो - पार्श्वनाथ
सप्पो - सर्प

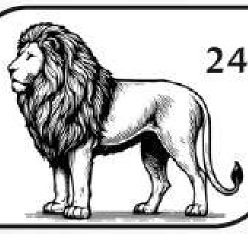

24. वड्ढमाणो - वर्द्धमान
सीहो - सिंह

## छट्ठो पाढो - परमेट्ठी (परमेष्ठी)

**पण्हं - परमेट्ठी-सद्दस्स किं अत्थं ?**
(परमेष्ठी शब्द का क्या अर्थ है ?)

**उत्तरो - जे परमपदे ठिदो सो परमेट्ठी भणदि।**
(जो परम पद में स्थित है वह परमेष्ठी है।)

**पण्हं - के परमेट्ठी ?**
(परमेष्ठी कितने होते हैं ?)

**उत्तरो - पंच परमेट्ठी संति।**
(परमेष्ठी पाँच होते हैं। )

**पण्हं - परमेट्ठीणं किं णामाणि लिखदु ?**
(परमेष्ठियों के नाम लिखिए।)

**उत्तरो - अरिहंतो, सिद्धो, आइरिओ, उवज्झायो, साहु च।**
(अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु।)

**पण्हं - अरिहंतस्स सरूवं किं ?**
(अरिहंत का स्वरूप क्या है ?)

**उत्तरो - चउघाइकम्मरहिया अणंतचदुट्ठयसहिया अरिहंता। छियालीस-मूलगुणा।**
(चार कर्मों से रहित, अणंत चतुष्टय से सहित अरिहंत हैं। उनके 46 मूलगुण हैं।)

**पण्हं** - **सिद्धो को ?**
(सिद्ध कौन हैं ?)

**उत्तरो** - **अट्ठकम्मरहिओ अट्ठगुणसहिओ सिद्धो।**
(आठ कर्मों से रहित, आठ गुणों से सहित सिद्ध हैं।)

**पण्हं** - **आयरिओ को ?**
(आचार्य कौन हैं ?)

**उत्तरो** - **संघसंचालओ पंचाचारपराइणो छत्तीसगुण सहिओ आइरिओ।**
(संघ संचालक, पंचाचार पालक, 36 गुणों से सहित आचार्य हैं।)

**पण्हं** - **उवज्झाओ को ?**
(उपाध्याय कौन हैं ?)

**उत्तरो** - **पढण-पाढणं करेंति करावेंति च रणयत्तयाराहगो उवज्झायो। पच्चीस-मूलगुणा।**
(पठन-पाठन करते हैं, कराते हैं, रत्नत्रय के आराधक हैं वे उपाध्याय हैं। उनके 25 मूलगुण है।)

**पण्हं** - **साहु किं ?**
(साधु कौन हैं ?)

**उत्तरो** - **णाण-ज्झाण-तवरत्तो सो साहु। अट्ठाईस-मूलगुणा संति।**
(ज्ञान-ध्यान-तप में रत हैं वे साधु हैं उनके 28 मूलगुण हैं।)

# **सत्तमो पाढो - सुभासिदाणि** (सुभाषित)

**1. को विवेगी?**

**सव्वेसु मित्तिभावो, दीणेसु उवयारं-दयाभावो।**
**सज्जणेसु वच्छल्लं, जस्स होदि हु विवित्तो सो ॥**

आचार्य श्री वसुनंदी विरचित-को विवेगी-26

**अर्थ**- जिसके सब जीवों पर मैत्री भाव, दीनों के प्रति उपकार, सज्जनों से वात्सल्य होता है, वह विवेकी है।

**2. भारभूओ ण होउ**

**पुरिसत्थी पमादी ण, होज्ज णायी णो णिद्दयी कया वि।**
**होदु खलु सारभूदो, भारभूदो ण होदु कहिं पि ॥**

आचार्य श्री वसुनंदी विरचित, गाथा-40

**अर्थ**- पुरुषार्थी बनो, प्रमादी नहीं, न्यायी बनो कभी भी निर्दयी नहीं, निश्चय ही सारभूत बनो, किसी पर भारभूत नही बनो।

**3. णाणस्स माहप्पं**

**णाणेण णायदे विस्सं, सव्वं तच्चं हिदाहिदं।**
**सेयासेयं च बंधं वा, मोक्खं धम्मं किदाकिदं ॥**

आचार्य श्री सुनीलसागर विरचित, सुनील प्राकृत समग्र, णीदि संगहो-49

**अर्थ**- ज्ञानी ज्ञान से विश्व को, सभी तत्त्वों को, हित-अहित को, श्रेय-अश्रेय को, बन्ध-मोक्ष को धर्म-अधर्म को और कृत अकृत को जानता है।

**4. विज्जाहीणो ण सोहए**

**रूव-जोवण-संपण्णा, विसालकुल-संभवा।**
**विज्जाहीणा ण सोहंते, णिग्गंथा इव किंसुगा ॥**

आचार्य श्री सुनीलसागर विरचित, सुनील प्राकृत समग्र, विज्जा त्थुदी, गाथा-6

**अर्थ**- रूव यौवन संपन्न और विशाल कुल में उत्पन्न मनुष्य भी विद्याहीन शोभित नहीं होते जैसे कि सुंदर वर्णवाला किन्तु गंधरहित कंसुक/पलाश का फूल।

**5. गुरुणो कडु भासणं**

**लोए गुरुणो कडु-भासणेणं, अणादिदो उग्गहदे महत्तं।**
**ठाणं मणी णेदि ण रायसीसे, कसं विणा संघरिसेण जीवो ॥**

मुनि श्री आदित्यसागर विरचित, णीदि-रहस्सं-32

**अर्थ**- लोक में गुरुजनों के कठोर शब्दों वाले कथन से अनादृत मनुष्य ही महत्त्व को प्राप्त करते हैं। ठीक है- कसौटी पर घिसे बिना मणि राजाओं के सिर पर स्थान नहीं पाती है।

**6. णीदिविज्जा**

**सगं सुहं देदि ण अण्णदुक्खं, सिट्ठप्पिया सा किल णीदिविज्जा।**
**सगं सुहं वा पुण अण्णदुक्खं, दुट्ठप्पिया सा णिव-कूड-णीदी ॥**

मुनि श्री आदित्यसागर विरचित, णीदि-रहस्सं-3

**अर्थ**- जो स्वयं को सुख और अन्य को दुःख नहीं होने देती, वही निश्चय से शिष्ट जनों के लिए प्रिय कही जाने वाली नीति विद्या हैं। और जो स्वयं को सुख पुनः अन्य को दुःख ही देती है, वही निश्चय से दुष्ट जनों के लिए प्रिय कहे जाने वाली नृपनीति या राजनीति और कूटनीति है।

**7. विसुद्ध सुहं**

**ण तं सुहं जं परदुक्खहेदुं परेण पत्तं णियमेण दुक्खं।**
**णिजीयसोक्खं हि विसुद्धसोक्खं इच्छेदि सो तं परमप्पबुद्धो ॥**

**अर्थ**- वह सुख नहीं है जो दूसरों के दुःख का कारण हो। दूसरे से प्राप्त किया गया सुख नियम से दुःख है। अपना निजी सुख ही विशुद्ध सुख है। जो उस सुख की इच्छा करता है वही परम प्रबुद्ध है।

**8. परोप्पग्गह-धम्मो**

**परस्सदाणं परवत्थुणो जं विभासिदं तं ववहारभूदं।**
**तदासयेणंवि परोप्परस्स उवग्गहो जो भणिदो सुधम्मो ॥**

**अर्थ**- पर वस्तु का पर के लिए जो दान दिया जाता है वह व्यवहारभूत कहा गया है। उस व्यवहार के आश्रय से भी परस्पर का जो उपकार है वह श्रेष्ठ धर्म (दान) कहा है।

## अट्ठमो पाढो - इंदियाणि (इन्द्रियाँ)

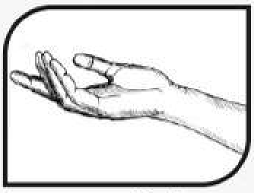

फासइंदियं

**पण्हं - इंदियस्स किं अत्थं ?**
(इन्द्रिय का क्या अर्थ है?)

**उत्तरो - संसारीजीवस्स अहिण्णाणस्स चिण्हं णाम इंदियं।**
(संसारी जीव के पहचान के चिह्न को इन्द्रिय कहते हैं।)

**पण्हं - इंदियाणि के संति? णामाणि लिखदु।**
(इन्द्रियाँ कितनी हैं? नाम लिखो।)

रसणाइंदियं

**उत्तरो - इंदियाणि पंच संति- फास-रसण-घाण-चक्खु-कण्णाणि।**
(इन्द्रियाँ पाँच हैं- स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु, कर्ण।)

**पण्हं - फास-इंदियस्स सरूवं किं ?**
(स्पर्शन इन्द्रिय का स्वरूप क्या है?)

**उत्तरो - सीयल-उसणो, रुक्ख-चिक्कणं, कडु-मिऊ, सुहुम-थूलं च फास इंदियस्स विसयो।**
(ठण्डा-गरम, रूखा-चिकना, कड़ा-नरम, हल्का-भारी स्पर्शन इन्द्रिय के विषय हैं।)

**पण्हं - रसणा-इंदियस्स सरूवं किं ?**
(रसना इन्द्रिय का स्वरूप क्या है?)

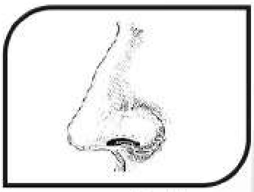

घाणइंदियं

**उत्तरो - खट्ठ-मिट्ठ-कडु-तिक्ख-कसायला च रसना-इंदियस्स विसयो।**
(खट्टा, मीठा, कड़वा, चरपरा, कसायला रसना इन्द्रिय के विषय हैं।)

**पण्हं - घाण-इंदियस्स सरूवं किं ?**
(घ्राण इन्द्रिय का स्वरूप क्या है?)

**उत्तरो - सुगंधदुग्गंधाणि घाण-इंदियस्स विषयो।**
(सुगन्ध और दुर्गन्ध घ्राण इन्द्रिय के विषय हैं।)

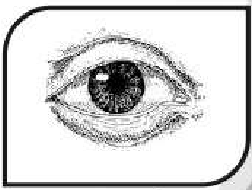

चक्खु-इंदियं

**पण्हं - चक्खु-इंदियस्स सरूवं किं ?**
(चक्षु इन्द्रिय का स्वरूप क्या है?)

**उत्तरो - सवेद-रत्त-पीत-णील-किसण-वण्णाणि चक्खु इंदियस्स विषयो।**
(सफेद, लाल, पीला, नीला, काला ये वर्ण चक्षु इन्द्रिय के विषय हैं।)

**पण्हं - कण्ण-इंदियस्स सरूवं किं ?**
(कर्ण इन्द्रिय का स्वरूप क्या है?)

कण्णइंदियं

**उत्तरो - सवणं सावणं य कण्णइंदिस्स विषयो।**
(स्वरों को सुनना और सुनाना कर्ण इन्द्रिय के विषय हैं।)

## **णवमो पाढो – गई / गदि** (गति)

णरगगई

**पण्हं – किं णाम गई ?**
(गति क्या है ?)

**उत्तरो – मरणोवरंतं आदा जत्थ गच्छइ सा गई अत्थि।**
(मरणोपरान्त आत्मा जहाँ जाती है, वह गति है।)

तिरियगई

**पण्हं – गइओ के संति ?**
(गतियाँ कितनी होती हैं?)

**उत्तरो – गइओ चत्तारि होंति।**
(गतियाँ चार होती हैं।)

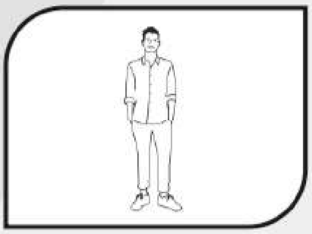

माणुसगई

**पण्हं – तेसिं किं णाम ?**
(उनके नाम क्या हैं?)

**उत्तरो – णरयगई, तिरिक्खगई, मणुस्सगई, देवगई य।**
(नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्यगति और देवगति।)

देवगई

### प्राकृत दिवस मनाएँ

**छक्खंडागम गंथं, जेट्ठं सुक्क पंचमीइ संपण्णं।**
**सो सुदपंचमी दिवसो, पागदभासा दिणो व्व मण्णेज्ज॥**

(आचार्य श्री सुनीलसागर जी कृत)

अर्थात् **षट्खण्डागम ग्रंथ ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी** को सम्पन्न हुआ। अतः वह **श्रुत पंचमी दिवस प्राकृत भाषा दिवस** के रूप में मनाना चाहिए।

## **दसमो पाढो - पावं** (पाप)

**पण्हं** - **पावं किं ?** (पाप क्या है ?)

**उत्तरो** - **जो अप्पणो किदे दुक्खं दाइ पावं अत्थि।**

(जो आत्मा के लिए दुःख दे वह पाप है।)

**पण्हं** - **पावं के ? णामाणि लिखदु।**

(पाप कितने हैं ? नाम लिखिए)

**उत्तरो** - **पंच-पावाणि- हिंसा-असच्च-थेय-कुसील-परिग्गहाणि।**

(पाप पाँच है- हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रह)

**पण्हं** - **हिंसा किं ?** (हिंसा क्या है ?)

**उत्तरो** - **घाअं हणणं पडिघायणं।** (प्राणों का घात करना हिंसा है।)

**पण्हं** - **असच्चं किं ?** (झूठ क्या है ?)

**उत्तरो** - **अलीकवयणं / मिच्छावयणं असच्चं अत्थि।**

(असत्य वचन/मिथ्यावचन असत्य है।)

**पण्हं** - **थेयो किं ?** (चोरी क्या है ?)

**उत्तरो** - **पुच्छं विणा वत्थुं गहणं थेयो।**

(बिना पूछे वस्तु ग्रहण करना चोरी है।)

**पण्हं** - **कुसीलपावं किं ?** (कुशील पाप क्या है ?)

**उत्तरो** - **मेहुणं कुसीलो।** (मैथुन को कुसील कहते हैं।)

**पण्हं** - **परिग्गहपावं किं ?** (परिग्रह पाप क्या है ?)

**उत्तरो** - **तिसणा-लोहेसु वत्थूणं संगहणं परिग्गहपावं।**

(तृष्णा-लोभ में वस्तु संग्रह करना परिग्रह पाप है।)

**पण्हं** - **पावस्स फलं किं ?** (पाप का फल क्या है ?)

**उत्तरो** - **पावस्स फलं णरय-पसुगदी एव हवइ।**

(पाप का फल नरक-तिर्यंच गति ही है।)

**पण्हं** - **पावचागस्स फलं किं ?** (पाप त्याग का फल क्या है ?)

**उत्तरो** - **पावचागस्स सग्ग-मोक्खसुहाणि पावइ।**

(पाप त्याग का फल स्वर्ग-मोक्ष सुख की प्राप्ति होना है।

## **एग्गारसो पाढो - कसायो** (कषाय)

**पण्हं - कसायो किं ?**
(कषाय क्या है ?)

**उत्तरो - जो अप्पाणो किदे पीडइ सो कसायो।**
(जो आत्मा को दुःख देता है वह कषाय है)

**पण्हं - कसाया के ?**
(कषाय कितनी हैं ?)

**उत्तरो - चउकसाया संति- कोहो, माणं, माया, लोहो य।**
(कषाय चार हैं- क्रोध, मान, माया, लोभ।)

**पण्हं - कोहस्स किं ?**
(क्रोध क्या है ?)

**उत्तरो - कुप्पं त्ति कोहो।**
(गुस्सा करना क्रोध है।)

**पण्हं - माणस्स किं ?**
(मान क्या है ?)

**उत्तरो - अहंभावं माणं।**
(अहंकार का भाव मान है।)

**पण्हं - माया किं ?**
(माया क्या है ?)

**उत्तरो - कुडिलभावो माया।**
(कुटिलभाव माया है)

**पण्हं - लोहो किं ?**
(लोभ क्या है ?)

**उत्तरो - तिण्हा भावो लोहो।**
(तृष्णा भाव ही लोभ है।)

**पण्हं - कसायेण किं किं हाणी हवइ ?**
(कषाय से क्या-क्या हानि हैं?)

**उत्तरो - अप्पणो पडणं, कम्मबंधणं, पावेसु पवित्तं, अवयसो दुक्खं च।**
(आत्मा का पतन, कर्मबंध पापों में प्रवृत्ति, अपयश और दुःख।)

## **बारसो पाढो - पाइय-सद्द-णाणं** (प्राकृत शब्द ज्ञान)
## **संबंधवाचग-णामाणि** (सम्बन्धवाचक नाम)

**पई - पति**

**पुत्तो - पुत्र**

**भज्जा - भार्या**

**पुत्ती - पुत्री**

**पिउ/पिअरो - पिता**

**पिआमहो - दादा**

**माया/माआ - माता**

**पिआमही - दादी**

**भाउ - भाई**

**माउलो - मामा**

**भगिणी - बहिन**

**माउली - मामी**

## तेरसो पाढो - सरीरस्स अंगाणं णामाइं (शरीर के अंगों के नाम)

जिब्भा - जीभ

कण्णं - कर्ण

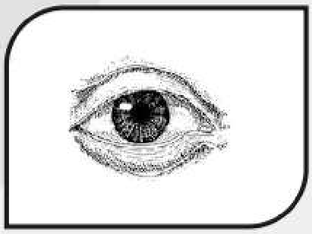

चक्खू - आँख

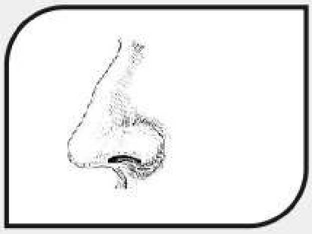

णासिआ - घ्राण

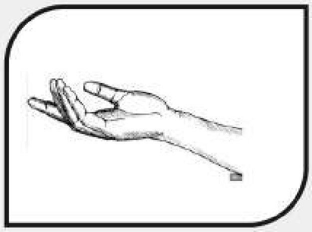

हत्थो - हाथ

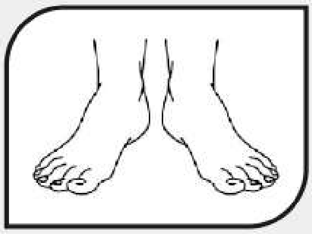

पादो - पैर

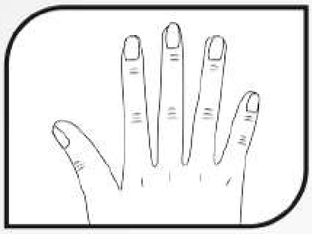

अंगुलि - अंगुली

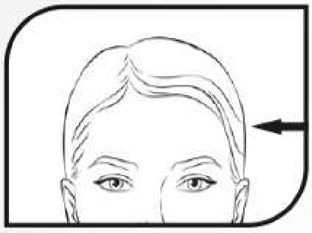

सिरं - शिर

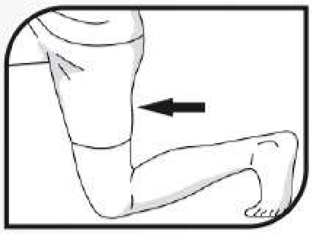

जंघा - जंघा

कडि - कमर

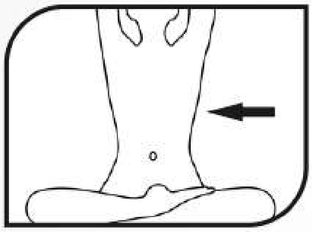

उदरं - पेट

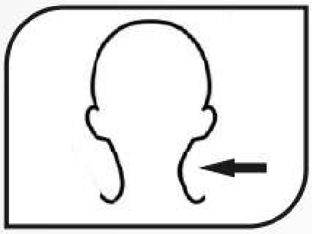

कंठो - गला

## चउद्दसो पाढो - पाइय संखा (प्राकृत संख्या- 1 से 50 तक)

| क्रमांक | प्राकृत | हिन्दी | अंक |
|---|---|---|---|
| 1. | एक्को, इक्को, एगो, एओ | एक | 1 |
| 2. | दो, दुवे, वे | दो | 2 |
| 3. | ति, तिण्णि | तीन | 3 |
| 4. | चउ, चउरो, चत्तारि | चार | 4 |
| 5. | पंच | पाँच | 5 |
| 6. | छट्ठ | छह | 6 |
| 7. | सत्त | सात | 7 |
| 8. | अट्ठ | आठ | 8 |
| 9. | णव | नौ | 9 |
| 10. | दह, दस | दस | 10 |
| 11. | एक्कारह, एगारस | ग्यारह | 11 |
| 12. | बारह, बारस | बारह | 12 |
| 13. | तेरह, तेरस | तेरह | 13 |
| 14. | चउद्दह, चउद्दस, चोद्दस | चौदह | 14 |
| 15. | पण्णरह, पण्णरस | पन्द्रह | 15 |
| 16. | सोलह, सोलस | सोलह | 16 |
| 17. | सत्तरह, सत्तरस | सत्तरह | 17 |
| 18. | अट्ठारह, अट्ठारस, | अठारह | 18 |
| 19. | एगूणवीस, उणवीस, | उन्नीस | 19 |
| 20. | वीस | बीस | 20 |
| 21. | एगवीस | इक्कीस | 21 |
| 22. | बावीस, बाईस | बाइस | 22 |
| 23. | तेवीस | तेईस | 23 |
| 24. | चउवीस | चौबीस | 24 |
| 25. | पण्णवीस, पणुवीस | पच्चीस | 25 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 26. | छब्बीस | छब्बीस | 26 |
| 27. | सत्तवीस, सत्तावीस | सत्ताईस | 27 |
| 28. | अट्ठावीस | अट्ठाईस | 28 |
| 29. | एगूणतीस | उनतीस | 29 |
| 30. | तीस | तीस | 30 |
| 31. | एक्कतीस | इकत्तीस | 31 |
| 32. | बत्तीस | बत्तीस | 32 |
| 33. | तेत्तीस | तैंतीस | 33 |
| 34. | चउतीस | चौंतीस | 34 |
| 35. | पण्णतीस, पणतीस | पैंतीस | 35 |
| 36. | छत्तीस | छत्तीस | 36 |
| 37. | सत्ततीस | सैंतीस | 37 |
| 38. | अडतीस | अड़तीस | 38 |
| 39. | एगूणचत्तालीस | उनतालीस | 39 |
| 40. | चत्तालीस, चालीस | चालीस | 40 |
| 41. | एक्कचत्तालीस | इकतालीस | 41 |
| 42. | बायालीस | बयालीस | 42 |
| 43. | तेआलीस | तैंतालीस | 43 |
| 44. | चउआलीस | चौंवालीस | 44 |
| 45. | पणयालीस | पैंतालीस | 45 |
| 46. | छयालीस | छियालीस | 46 |
| 47. | सत्तचत्तालीस | सैंतालीस | 47 |
| 48. | अट्ठचत्तालीस | अड़तालीस | 48 |
| 49. | एगूणपण्णास | उनचास | 49 |
| 50. | पण्णास | पचास | 50 |

## **पण्णरसो पाढो - पाइय पसंसा** (प्राकृत प्रशंसा)

**पाइयकव्वस्स नमो पाइयकव्वं च निम्मियं जेण।**
**ताहं चिय पणमामो पढिऊण य जे वि जाणंति ॥**

वज्जालग्गं

प्राकृत काव्य को नमस्कार तथा जिसके द्वारा प्राकृत काव्य रचा गया है उसको भी नमस्कार तथा जो भी लोग काव्य को पढ़कर समझते हैं, उनको भी हम प्रणाम करते हैं।

**णवमत्थ-दंसणं संनिवेस सिसिराओ बन्ध-रिद्धीओ।**
**अविरलमिणमो आभुवण-बन्धमिह णवर पययम्मि ॥**

गउडवहो/92

सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर आज तक प्रचुर परिमाण में नूतन-नूतन अर्थों का दर्शन तथा सुन्दर रचनावाली प्रबन्ध-सम्पत्ति यदि कहीं भी है, तो केवल प्राकृत में है।

**फरुसा सक्क अबंधो पाउसबंधो वि होइ सुउमारो।**
**पुरिसमहिलाणं जेत्तिअमिहंतरं तेत्तिअमिमाणं ॥**

कर्पूरमंजरी1/6

संस्कृत का गठन परुष और प्राकृत का गठन सुकुमार है। पुरुष और महिलाओं में जितना अंतर होता है उतना ही अंतर संस्कृत और प्राकृत काव्य में समझना चाहिये।

**सयलाओ इमं वाया विसंति एत्तो य णेंति वायाओ।**
**एंति समुद्दं चिय णेंति सायराओ च्चिय जलाइं ॥**

गउडवहो/93

आठवीं शताब्दी के विद्वान् वाक्पतिराज गउडवहो में कहते हैं - जिस प्रकार जल समुद्र में प्रवेश करता है और समुद्र से ही वाष्प रूप में बाहर निकलता है, इसी तरह प्राकृत भाषा में सब भाषायें प्रवेश करती है और इस प्राकृत भाषा से ही सब भाषायें निकलती हैं। तात्पर्य यह है कि प्राकृत भाषा की उत्पत्ति अन्य किसी भाषा से नहीं हुई है, किन्तु सभी भाषायें प्राकृत से ही उत्पन्न है।

## **सोलसो पाढो - तित्थयरो-महावीरो** (तीर्थंकर महावीर)

जिणसासणे चउवीस-तित्थयरा जादा। आदिबंभा सिरी रिसहदेवो पढमो तित्थयरो जादो। तं णंतरं तेवीस तित्थयरा जादा, पच्छा महावीरो भगवदो अंतिम तित्थयरो अत्थि। जंबूदीवे भरहखेत्ते भारहदेसे कुंडपुरणयरे परक्कमी, धम्मपरायणो, अदिसूरो महाराया सिद्धत्थो सव्वगुण-पुण्णा पियकारिणी तिसला महिसी जुत्तेण रज्जं कुव्वतो वसदि आसी। तेण पुण्णवंत-जुयलेण वड्ढमाण-महावीरस्स जम्म जादो।

मादा तिसला जदा गब्भं धारेदि, तदा पुव्वे सा सोलह-मंगलकारी सिविणं अवलोयदि। तं सिविणस्स फलं राया परिभासदि- अदिमंगलगारीणि सिविणाणिं, तुमं सुज्जसम-तेजस्सी अदिगहीर-तित्थयर-पुत्तस्स मादा होहिसि।

गब्भादो णव-माहा-पच्छा चेत्तमासस्स तेरसतिहीए ईसापुव्व-पंचसद-णिण्णाणवे सुहमंगल-दिवसे वड्ढमाणमहावीरस्स जम्म-महुच्छवं जम्माहिसेगं च जादो। सुरासुर-णरिंदाहिणुदवीर-बालगस्स पंचणाम पसिदं। तं जहा-वड्ढमाणो, महावीरो, वीरो, सम्मदी, अदिवीरो य। देव-णर-बालगेहिं सह कीडंतो, तच्चाहिगमेण सुड्ढु-मणो-विणोदेण तस्स बालत्तणं पुण्णो जादो।

जोव्वत्तणे सो जुवरायो सदा अणुवेक्खाणं, चिंतणरदो होदि। सो विचिंतेदि जुवराय-रायपदे य पदिष्ट्ठदम्हिं किं होज्जइ। सव्वत्थ हिंसा, अणायारो, असंती, अधम्मो, एगंतवादो य अत्थि। अहं संसारे अहिंसा, संती, धम्मप्पसारं करेहिमि।

एकदा मादा-पिदा सम्मुहे गंतूण महावीरेण अप्प पर कल्लाणत्थं, हिंसादिपाव-विणासणत्थं णिग्गंथदिक्खाहेदुं आणा गहीअ, महाघोर-तव-चागं च किदो। बारसवास पज्जंतं घोरतवं काऊण तेण केवल-णाणादि अणंतगुणाणि पत्ता। अहिंसा-सच्च-बंभचेर-अचोरिय-अणेगंतवाद अपरिग्गहवादादि-जणकल्लाणकारी सिद्धंताणं उवदेसं दाऊण बाहत्तरि वरिसावसाणे पावापुरीदो महावीर-भगवदो मोक्खं गदो।

# **तीर्थंकर महावीर** (हिन्दी अनुवाद)

जिनशासन में चौबीस तीर्थंकर हुए हैं। आदि ब्रह्मा श्री ऋषभदेव प्रथम तीर्थकर हुए हैं। उसके बाद तेईस तीर्थंकर उत्पन्न हुए। पीछे तीर्थंकर भगवान महावीर अंतिम तीर्थंकर हुए। जंबूद्वीप भरत क्षेत्र में भारत देश में कुण्डलपुर नगर में पराक्रमी, धर्म परायण, अतिशूर महाराज सिद्धार्थ सब गुणों से पूर्ण प्रिय कारिणी त्रिशला पटरानी सहित राज्य करते थे। उस पुण्यवान युगल से वर्धमान महावीर का जन्म हुआ ।

माता त्रिशला जब गर्भ धारण करती हैं, तब पूर्व में वह सोलह मंगलकारी स्वप्नों को देखती हैं। उन स्वप्नों का फल राजा बताते हैं कि अति-मंगलकारी स्वप्न हैं, तुम सूर्य समान तेजस्वी, अतिगंभीर तीर्थंकर पुत्र की माता होओगी।

गर्भ से नौ माह पश्चात् चैत्र माह की तेरस तिथि, ईसा पूर्व पाँच सौ निन्यानवे के शुभ मंगल दिन वर्द्धमान महावीर का जन्म महोत्सव, जन्माभिषेक हुआ। सुर-असुर-नरेन्द्र-वंदित वीर बालक के पाँच नाम प्रसिद्ध हुए। वह इस प्रकार हैं-वर्धमान, महावीर, वीर, सन्मति, अतिवीर। देव और मनुष्य बालकों के साथ खेलते हुए, तत्त्वों के ज्ञान से, उत्तम प्रकार के मनोरंजन से उनका बचपन पूर्ण हुआ।

यौवनावस्था में वह युवराज नित्य अनुप्रेक्षादि के चिंतन में रत रहते। वह विचारते कि- युवराज और राज पद पर प्रतिष्ठित होने से क्या होगा ? सब ओर हिंसा, अनाचार, अशांति, अधर्म, एकांतवाद है। मैं संसार में अहिंसा, शांति और धर्म का प्रसार करूँगा।

एक बार माता-पिता के सामने जाकर महावीर ने स्व पर कल्याण के लिये, हिंसादि पाप नष्ट करने के लिए निग्रंथ दीक्षा हेतु आज्ञा ग्रहण कर, महा-घोर तप और त्याग किया। बारह साल पर्यन्त घोर तप करके उनको केवल-ज्ञानादि अनंतगुण प्राप्त हुए। अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, अचौर्य, अनेकांतवाद, अपरिग्रहवाद आदि जनकल्याणकारी सिद्धांतों का उपदेश देकर बहत्तर वर्ष पूर्ण होने पर पावापुरी से महावीर-भगवान मोक्ष गये।

## सत्तरहो पाढो - पाइयभासाए गंथाणं णाम (ग्रन्थों के नाम)

1. **छक्खण्डागम** (षट्खण्डागम)
2. **कसायपाहुडो** (कषायप्राभृत)
3. **समयसारो** (समयसार)
4. **पवयणसारो** (प्रवचनसार)
5. **पंचत्थिकायो** (पंचास्तिकाय)
6. **तिलोयपण्णत्ति** (त्रिलोकप्रज्ञप्ति)
7. **दव्वसंगहो** (द्रव्यसंग्रह)
8. **बारखाणुपेक्खा** (द्वादशानुप्रेक्षा)
9. **तिलोयसारो** (त्रिलोकसार)
10. **गोम्मटसारो** (गोम्मटसार)
11. **आयारो** (आचारांग)
12. **ठाणांगं** (स्थानांग)
13. **उत्तरज्झयणं** (उत्तराध्ययन)

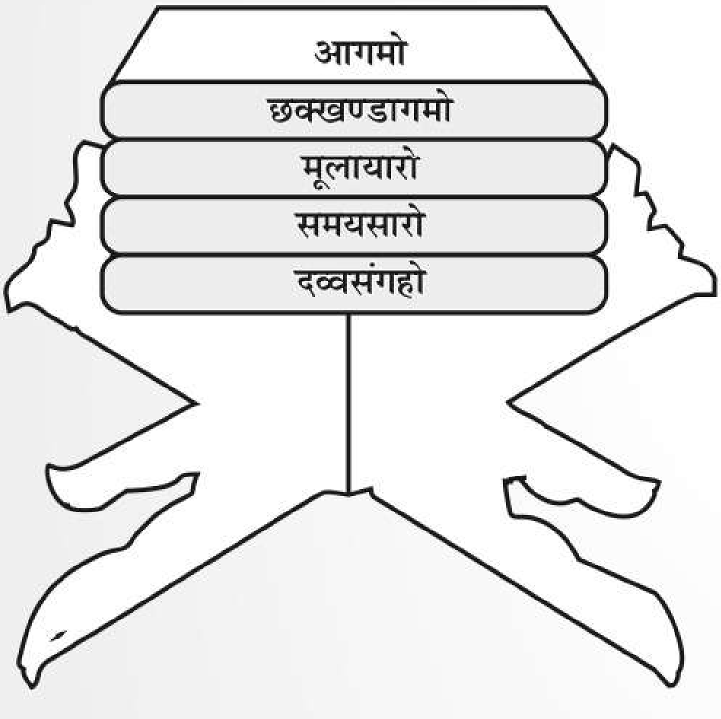

## अट्ठारहो पाढो - पाइयभासाए आयरियाणं मुणीणं य णाम

(प्राकृत भाषा के आचार्य एवं मुनियों के नाम)

1. **आयरिअसिरि-पुप्पदंतसामी** (आचार्यश्री पुष्पदंत स्वामी)
2. **आयरिअसिरि-भूदबलिसामी** (आचार्यश्री भूतबलि स्वामी)
3. **आयरिअसिरि-गुणधरो** (आचार्यश्री गुणधर स्वामी)
4. **आयरिअसिरि-कुंदकुंदो** (आचार्यश्री कुंदकुंद स्वामी)
5. **आयरिअसिरि-णेमिचंदो** (आचार्यश्री नेमिचंद स्वामी)
6. **आयरिअसिरि-वीरसेणसामी** (आचार्यश्री वीरसेन स्वामी)
7. **आयरिअसिरि-वसुनंदीसामी** (आचार्यश्री वसुनंदी स्वामी)
8. **आयरिअसिरि-सुणीलसायरो** (आचार्यश्री सुनीलसागर स्वामी)
9. **मुणिसिरि पणम्मसायरो** (मुनिश्री प्रणम्यसागरजी महाराज)
10. **मुणिसिरि आदिच्चसायरो** (मुनिश्री आदित्यसागरजी महाराज)

## **एगोणवीसो पाढो - लोयोत्तीओ** (लोकोक्तियाँ)

**अद्धो घडो घोसं उवेइ णूणं।**

( थोथा चना बाजे घना)

**इओ भट्ठो तओ  णट्ठो।**

(धोबी का कुत्ता घर का न घाट का)

**कंचुयं एव्व णिंदइ सुक्क त्थणी।**

(नाच न आवे आंगन टेडा)

**गयस्स सोयणं  णत्थि।**

(अब  पछताये हो क्या जब चिड़िया चुग गई खेत)

**छिद्देसु अणत्था बहुलीहवंति।**

(कंगाली में आटा गीला)

**वीरभोग्गा वसुंधरा।**

(जिसकी लाठी उसी की भैंस)

**णवा वाणी मुहे मुहे।**

(पाँचों अंगुलियाँ बराबर नहीं होती।)

**अइदप्पे हया लंका।**

(अहंकार का सिर नीचा)

# वीसो पाढो - गीयं (गीत)

कदावि ण करणं हिंसा।
कदावि ण वयणं मिच्छा।
कदावि ण चोरं वत्थुं।
कदावि ण दंसणं णिम्णं।
कदावि ण आसत्तिं करणं।

सया करणं देवपूया।
सया करणं गुरुसेवा।
सया करणं सज्झायो।
सया करणं दाणं दाणं।

## **एगवीसो पाढो - सुभासिदवयणं** (सुभाषित वचन)

**धम्मो दयाविसुद्धो।**

धर्म दया से विशुद्ध है।

**विणओ मोक्खद्दारं।**

विनय मोक्ष का द्वार है।

**जिणवयणं कलुसहरं अहो य रत्ती य पढिदव्वं।**

जिन भगवान के वचन कलुषता को हरने वाले हैं, इसलिए जिनवचन रात-दिन पढ़ना चाहिए।

**अज्झप्प कज्जं चिरमोहहाणी।**

अध्यात्म का कार्य चिरकालीन मोह का नाश करना है।

**वीलणमच्छोव्व मणो।**

मन अति चिकने मच्छ की तरह हैं।

**अप्पपसंसं परिहरह।**

आप्त प्रशंसा करना छोड़ दो।

**गुरुवयणं भमहरणं।**

गुरुवचन भ्रम को दूर करते हैं।

**जिणवयण-मोसहमिणं।**

यह जिनवचन औषध है।

**पुरिसत्थो दुल्लहो लोए।**

पुरुषार्थ करना लोक में दुर्लभ है।

**जत्थ रुई तत्थ मग्गो वि।**

जहाँ रुचि है वहाँ रास्ता भी है।

## गोम्मटेस-थुदी

विसट्ट-कंदोट्ट-दलाणुयारं, सुलोयणं चंद-समाण-तुण्डं।
घोणाजियं चम्पय-पुप्फसोहं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं ॥१॥

अच्छाय-सच्छं जलकंत गंडं, आबाहु दोलंत सुकण्ण पासं।
गइंद-सुण्डुजल-बाहुदण्डं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं ॥२॥

सुकण्ठ-सोहा जियदिव्व संखं, हिमलायुद्दाम विसाल कंधं।
सुपेक्ख णिज्जायल सुट्ठुमज्झं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं ॥३॥

विज्झायलग्गे पविभासमाणं, सिहामणि सव्व-सुचेदियाणं।
तिलोय-संतोसय-पुण्णचंदं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं ॥४॥

लयासमक्कंत - महासरीरं, भव्वावलीलद्ध - सुकप्परुक्खं।
देविंदविंदच्चिय- पायपोम्मं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं ॥५॥

दियंबरो जो ण च भीइजुत्तो, ण चांबरे सत्तमणो विसुद्धो।
सम्पादिजंतुप्फुसदो ण कंपो, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं ॥६॥

आसां ण जो पेक्खदि सच्छदिट्ठि, सोक्खे ण वंछा हयदोसमूलं।
विरायभावं भरहे विसल्लं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं ॥७॥

उपाहिमुत्तं धण-धाम वज्जियं, सुसम्मजुत्तं मय-मोहहारयं।
वस्सेय-पज्जंतमुववास-जुत्तं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं ॥८॥

पंजीयन क्रमांक - 06/09/01/15303/25

# प्राकृत भाषा विकास फाउण्डेशन (रजि.) (PBVF)

## PRAKRIT BHASHA VIKAS FOUNDATION

**पावन प्रेरणा** : प्राकृताचार्यश्री 108 सुनीलसागरजी महाराज।

**प्रशस्त प्रसंग** : भारत सरकार द्वारा प्राकृत भाषा को शास्त्रीय भाषा की घोषणा।

**मूल उद्देश्य** : प्राचीनतम प्राकृत भाषा का संरक्षण व संवर्धन।

**नम्र निवेदन** : श्रुत पंचमी पर्व को श्रुत पंचमी-प्राकृत दिवस के रूप में मनाएँ।

**कार्ययोजनाएँ** : 1. पंचवर्षीय प्राकृत अध्ययन, 2. प्राकृत पाठशाला, 3. प्राकृत प्रतियोगिताएँ 4. साहित्य प्रकाशन, 5. पाण्डुलिपि सम्पादन, 6. पुरस्कार एवं उपाधि अलंकरण, 7. प्राकृत विद्या शिक्षण शिविर, 8. प्राकृत प्रशिक्षण शिविर, 9. प्राकृत संभाषण शिविर, 10. संगोष्ठी/कार्यशाला, 11. वार्षिक अधिवेशन, 12. शोध पत्रिका प्रकाशन (हिन्दी), 13. न्यूज बुलेटिन (हिन्दी), 14. अंग्रेजी मेगजीन, 15. प्राकृत पत्रिका आदि।

### प्राकृत भाषा विकास फाउण्डेशन समिति हेतु राशि

शिरोमणि संरक्षक - 500000/-      परम संरक्षक- 111000/-

| | |
|---|---|
| संरक्षक | - 51000/- |
| प्राकृत गौरव | - 21000/- |
| प्राकृतस्नेही | - 11000/- |
| प्राकृतप्रेमी | - 5100/- |
| प्राकृत शिविर (प्रति शिविर) | - 31000/- |

खाता नाम-
PRAKRIT BHASHA VIKAS FOUNDATION
खाता नम्बर- 105594600000279
IFSC- YESB0001055
बैंक का नाम- YES BANK SAGAR

आपके सहयोग हेतु

prakrit bhasha vikas foundation

क्यू.आर.कोड

संस्था का पंजीकृत कार्यालय- 53/1, पिपरिया धर्मश्री मार्ग, सागर (म.प्र.)
WEBSITE - www.prakritbhasha.com, EMAIL - prakritfoundation25@gmail.com
CONTACT NO. - 93290-92390

| अध्यक्ष | महामंत्री |
|---|---|
| डॉ. ऋषभचन्द्र जैन फौजदार, दमोह | डॉ. आशीष जैन आचार्य शाहगढ़, सागर |

कार्यकारिणी एवं समस्त सदस्यगण।

प्रकाशक
प्राकृत भाषा विकास फाउण्डेशन (रजि.)
सागर (म.प्र.)

978-81-986457-2-2